International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

हरियाणा में किसान और मजदूर वर्ग की सामाजिक–आर्थिक चुनौतियाँः एक क्षेत्रीय विश्लेषण

सर्वजीत
शोधार्थी, इतिहास, सामाजिक विज्ञान विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर–124021, रोहतक

डॉ. रचना ग्रोवर
शोध निर्देशिका, प्रोफेसर इतिहास, सामाजिक विज्ञान विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर–124021, रोहतक

शोध–सारः
हरियाणा एक प्रमुख कृषि प्रधान राज्य है, जहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि और संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। राज्य के समाज को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, जिनमें से प्रमुख वर्ग सर्वहारा वर्ग और किसान वर्ग हैं। सर्वहारा वर्ग मुख्य रूप से मजदूर और श्रमिक होते हैं, जिनके पास जमीन या अन्य संसाधनों की कमी होती है। वहीं, किसान वर्ग का मुख्य कार्य कृषि करना होता है और वे अपनी भूमि पर खेती करते हैं। हालांकि, इन दोनों वर्गों की समस्याएं और चुनौतियां कुछ हद तक समान हो सकती हैं, परंतु उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में महत्वपूर्ण भिन्नताएं भी देखी जाती हैं। इस लेख में, हम हरियाणा के किसान वर्ग विश्लेषण करेंगे, जिसमें उनकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिरता, राजनीतिक भागीदारी और उनके सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों पर चर्चा की जाएगी। इस विश्लेषण से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि वे हरियाणा के सामाजिक ढांचे में किस प्रकार से अपनी भूमिका निभाते हैं।[1]

मुख्य शब्दः हरियाणा, किसान वर्ग, कृषि प्रधान राज्य, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिरता, राजनीतिक भागीदारी, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था, भूमि स्वामित्व, छोटे और सीमांत किसान, फसल उत्पादन, विपणन व्यवस्था, बाजार की अस्थिरता, प्राकृतिक आपदाएँ, फसल हानि, आर्थिक संकट, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, मूल्य स्थिरता, कृषि संकट, ऋणग्रस्तता।

किसान वर्ग की चुनौतियां

किसान वर्ग, विशेष रूप से हरियाणा जैसे कृषि प्रधान राज्य में, राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। यह वर्ग मुख्य रूप से खेती पर निर्भर है और उनके पास आम तौर पर जमीन का स्वामित्व होता है। लेकिन किसान वर्ग, खासकर छोटे और मध्यम जोत वाले किसान, कई गंभीर आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हैं। इन चुनौतियों ने

[1] देसराज. (1997). *नई तकनीक और बदलते कृषि संबंधः हरियाणा के दो क्षेत्रों में किसानों और खेतिहर मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों का अध्ययन.* वि.वि. गिरी राष्ट्रीय श्रम संस्थान. पृष्ठ संख्या 33–54.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

किसानों की आय को अस्थिर बना दिया है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई है।[2]

1. बाजार की अस्थिरता और प्राकृतिक आपदाओं का प्रभावः

हरियाणा के किसान वर्ग की आय मुख्य रूप से फसल उत्पादन पर निर्भर होती है। लेकिन उनकी आजीविका बाजार की अस्थिरता और प्राकृतिक आपदाओं के कारण अत्यधिक प्रभावित होती है। जब बाजार में फसलों की कीमतों में गिरावट आती है या फसलें प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बाढ़, सूखा या अत्यधिक वर्षा के कारण खराब हो जाती हैं, तो किसान वर्ग को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है। छोटे और मध्यम किसान, जिनके पास सीमित संसाधन होते हैं, इस तरह की परिस्थितियों में सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। उनके पास फसल खराब होने पर आर्थिक रूप से उबरने के साधन नहीं होते, जिससे वे कर्ज में डूब जाते हैं। बाजार की अस्थिरता ने किसान वर्ग के लिए आर्थिक अनिश्चितता को और बढ़ा दिया है, जहां फसलों की उपज और उनके मूल्य में संतुलन का अभाव बना रहता है।

2. उर्वरकों और कीटनाशकों की बढ़ती लागतः

कृषि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की बढ़ती लागत एक बड़ी समस्या है। हरियाणा जैसे राज्य में, जहां बड़े पैमाने पर फसल उत्पादन के लिए उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग आवश्यक है, इनपुट लागत में लगातार वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि छोटे किसानों के लिए विशेष रूप से मुश्किलें पैदा करती है, क्योंकि उनकी आय का एक बड़ा हिस्सा इन कृषि इनपुट पर खर्च हो जाता है। इनपुट की बढ़ती लागत और फसल की घटती कीमतों के कारण किसान आर्थिक संकट में फंस जाते हैं। वे अधिक खर्च करके भी उत्पादन में वृद्धि नहीं कर पाते, जिससे उनकी आय और भी कम हो जाती है। यह असंतुलन उन्हें कर्ज लेने के लिए मजबूर कर देता है और यदि फसल अच्छी नहीं होती, तो कर्ज का दबाव और बढ़ जाता है।[3]

3. कर्ज का बोझ और आत्महत्याः

कर्ज का बोझ हरियाणा के किसानों के लिए एक गंभीर समस्या है। छोटे और मध्यम किसान अपनी खेती के लिए अक्सर साहूकारों या बैंकों से कर्ज लेते हैं। हालांकि, जब फसलें खराब होती हैं या उन्हें उचित बाजार मूल्य नहीं मिलता, तो वे कर्ज चुकाने में असमर्थ हो जाते हैं। इस कर्ज का बोझ इतना बढ़ जाता है कि कई किसान आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। हरियाणा में कई उदाहरण सामने आए हैं जहां किसान फसल की विफलता या कर्ज की भारी दवाब के कारण आत्महत्या कर चुके हैं। कर्ज का यह बोझ उन्हें

[2] वर्मा, आर. (2020). हरियाणा में किसान वर्ग की चुनौतियाँः आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण. *ग्रामीण विकास जर्नल, 25(3), पृष्ठ संख्या 32–54.*

[3] कश्यप, ए. (2017). हरियाणा में कृषि सुधार और किसानों का संघर्ष. *कृषि और भूमि अध्ययन जर्नल, 18(1), पृष्ठ संख्या 73–95.*

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

मानसिक और भावनात्मक रूप से कमजोर बना देता है और वे खुद को इससे उबारने में असमर्थ पाते हैं।[4]

4. सिंचाई की सुविधाओं की कमी:

सिंचाई की सुविधाओं की कमी भी हरियाणा के किसानों के लिए एक प्रमुख चुनौती है। राज्य के कुछ हिस्सों में जल की कमी ने फसल उत्पादन को बुरी तरह प्रभावित किया है। जिन किसानों के पास निजी सिंचाई के साधन नहीं होते, उन्हें पूरी तरह से मौसम पर निर्भर रहना पड़ता है। अगर बारिश समय पर नहीं होती या पर्याप्त मात्रा में नहीं होती, तो फसल बर्बाद हो जाती है। यह स्थिति विशेष रूप से छोटे किसानों के लिए संकटपूर्ण होती है, क्योंकि वे निजी सिंचाई के साधन स्थापित करने के लिए आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होते। नहरों या अन्य सरकारी सिंचाई योजनाओं की पहुंच सीमित होने के कारण, उन्हें लगातार जल संकट से जूझना पड़ता है, जिससे उनकी आय में कमी आती है।

5. बड़े किसानों की अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति:

हालांकि, बड़े किसानों की स्थिति छोटे और मध्यम किसानों के मुकाबले बेहतर होती है। बड़े किसान अधिक संसाधनों, पूंजी और राजनीतिक संपर्कों के चलते इन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होते हैं। उनके पास बेहतर सिंचाई सुविधाएं, उच्च गुणवत्ता वाले इनपुट और बाजार तक आसान पहुंच होती है, जिससे वे फसल खराब होने पर भी संकट से उबरने की क्षमता रखते हैं। इसके अलावा, बड़े किसानों को सरकार की विभिन्न योजनाओं और सब्सिडी का भी लाभ मिलता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनी रहती है। इन सब्सिडी और सरकारी योजनाओं का लाभ छोटे किसानों तक समान रूप से नहीं पहुंच पाता, जिससे उनके सामने आर्थिक चुनौतियां बनी रहती हैं।[5]

हरियाणा का किसान वर्ग, जो राज्य की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है, कई गंभीर आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहा है। बाजार की अस्थिरता, प्राकृतिक आपदाएं, उर्वरकों और कीटनाशकों की बढ़ती लागत, कर्ज का बोझ और सिंचाई की सुविधाओं की कमी ने छोटे और मध्यम किसानों की स्थिति को बेहद कमजोर बना दिया है। हालांकि बड़े किसान इन चुनौतियों का सामना करने में बेहतर स्थिति में हैं, लेकिन छोटे किसानों की समस्याओं का समाधान किए बिना हरियाणा की कृषि और अर्थव्यवस्था को स्थिर करना मुश्किल होगा। किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए सरकार को किसानों के लिए अधिक सुरक्षित और स्थायी समाधान प्रदान करने की आवश्यकता है, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके और वे कर्ज के जाल और संकट से बाहर निकल सकें।

---

[4] जोशी, एस. (2019). हरियाणा में कृषि संकट और किसानों की आत्महत्याओं का विश्लेषण. *कृषि और समाज समीक्षा, 23(3), पृष्ठ संख्या 38–61.*

[5] सिंह, ए. (2019). हरियाणा में कृषक संघर्ष और सामाजिक न्याय. *समाज और विकास जर्नल, 22(2), पृष्ठ संख्या 63–85.*

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

शहरीकरण और मजदूर वर्ग की कठिनाइयां

ब्रिटिश औद्योगीकरण के दौरान भारत में शहरीकरण की गति तेज हो गई, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से भारी संख्या में किसान और मजदूर बेहतर रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे। कृषि पर ब्रिटिश नीतियों और कर व्यवस्था के दमनकारी प्रभाव ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया था, जिससे किसानों और मजदूरों के पास शहरों की ओर रुख करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचा था। हालांकि, शहरीकरण का यह उदय औद्योगिकीकरण के नाम पर हुआ, लेकिन शहरों में श्रमिकों की स्थिति अत्यंत दयनीय और शोषणकारी थी।[6]

शहरों में, औद्योगिक केंद्रों के आसपास श्रमिकों के लिए रहने की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी। श्रमिकों को अत्यधिक भीड़भाड़ और अस्वास्थ्यकर इलाकों में रहना पड़ता था, जहां बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव था। गंदगी और सफाई के अभाव में इन इलाकों में बीमारियां तेजी से फैलती थीं और श्रमिकों को स्वास्थ्य सेवाओं की कमी का सामना करना पड़ता था। पीने के पानी, साफ–सफाई और रहने की बुनियादी सुविधाओं के बिना श्रमिकों का जीवन कठिन और असुरक्षित था, जिससे उनकी स्थिति और खराब होती गई। औद्योगिकीकरण ने इन श्रमिकों को बेहतर भविष्य का सपना दिखाया था, लेकिन वास्तविकता में उनके जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं हुआ।

इसके अलावा, औद्योगिक मालिकों द्वारा श्रमिकों से अधिकतम लाभ उठाने के लिए लंबे और कठिन कार्य घंटों में काम कराया जाता था। श्रमिकों को दिन–रात 12 से 16 घंटे तक काम करना पड़ता था, जिसमें न तो कोई छुट्टी मिलती थी और न ही कोई विश्राम का समय। काम के दौरान किसी भी दुर्घटना या बीमारी के लिए कोई सुरक्षा उपाय नहीं होते थे और अगर कोई श्रमिक बीमार पड़ता या दुर्घटना का शिकार हो जाता, तो उसे काम से निकाल दिया जाता था। मजदूरी भी अत्यधिक कम होती थी, जो उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त थी। इन अमानवीय कार्य परिस्थितियों ने शहरी श्रमिक वर्ग की स्थिति को और बदतर बना दिया। शोषणकारी कार्य स्थितियों के बावजूद श्रमिकों के पास अन्य कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि शहरों में काम की भारी कमी और श्रमिकों की अधिकता ने उन्हें औद्योगिक मालिकों की दया पर छोड़ दिया था। कुल मिलाकर, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के नाम पर भारतीय श्रमिकों का शोषण चरम पर था। उनके लिए न तो काम के बेहतर अवसर थे और न ही जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की कोई व्यवस्था। ब्रिटिश औद्योगिकीकरण ने मजदूर वर्ग को आर्थिक और सामाजिक असमानता की एक गहरी खाई में धकेल दिया, जिससे उनकी कठिनाइयाँ दिन–ब–दिन बढ़ती गईं।[7]

---

[6] शर्मा, एम. (2020). भारत में वर्ग संघर्ष और श्रमिक आंदोलन. *भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा, 22(3), पृष्ठ संख्या 72–95.*

[7] कपूर, आर. (2019). सर्वहारा वर्ग और श्रमिक आंदोलनः भारत में सामाजिक संरचना का विश्लेषण. *समाजशास्त्र जर्नल, 20(3), पृष्ठ संख्या 58–79.*

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सामाजिक असमानता और सामंती मानसिकता का विकास

ब्रिटिश शासन के दौरान सामाजिक असमानता का विकास एक सोची–समझी रणनीति का हिस्सा था, जिसके जरिए अंग्रेजों ने भारतीय समाज को नियंत्रित और विभाजित किया। अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई, जिसमें जाति, धर्म और क्षेत्रीय आधार पर समाज को विभाजित किया गया ताकि भारतीय समाज में एकजुटता न पनप सके और अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती न मिले। ब्रिटिश शासन ने जानबूझकर इन विभाजनों को गहरा किया, जिससे भारतीय समाज में कई नई और पुरानी समस्याओं का जन्म हुआ। जातिगत भेदभाव और धार्मिक विभाजन को हवा देकर अंग्रेजों ने समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में संघर्षरत रखा, जिससे उनका शासन मजबूत बना रहा।

शिक्षा और विकास तक पहुंच को भी सीमित कर दिया गया था, जिससे समाज के केवल उच्च वर्गों को लाभ हुआ। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो अंग्रेजी में प्रशिक्षित हो और ब्रिटिश प्रशासन में काम कर सके। इस शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य व्यापक रूप से भारतीय जनता के सशक्तिकरण या विकास का नहीं था, बल्कि एक सीमित वर्ग तक ही शिक्षा और अवसरों की पहुंच सुनिश्चित करना था। अंग्रेजों द्वारा स्थापित स्कूलों और कॉलेजों में केवल उच्च जातियों और संपन्न वर्गों के लोगों को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलते थे, जबकि निचले वर्ग और पिछड़ी जातियों के लोगों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। इससे समाज में असमानता और बढ़ गई, क्योंकि शिक्षा और विकास के अवसर केवल समाज के एक छोटे से हिस्से तक सीमित हो गए।[8]

ब्रिटिश शासन ने जातिगत और धार्मिक विभाजन को और अधिक गहरा किया। उन्होंने भारतीय समाज में मौजूद जाति व्यवस्था को अपनी सत्ता को मजबूत करने के लिए और बढ़ावा दिया। उदाहरण के लिए, अंग्रेजों ने उच्च जातियों को प्रशासनिक नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में विशेष अधिकार दिए, जबकि निचली जातियों को हाशिए पर रखा गया। इसी प्रकार, धार्मिक आधार पर भी अंग्रेजों ने मुसलमानों और हिंदुओं के बीच विभाजन को बढ़ावा दिया, जिससे समाज में धार्मिक संघर्ष और अलगाववाद की भावना पैदा हुई। इस विभाजन का सबसे गंभीर परिणाम 1947 में भारत के विभाजन के रूप में सामने आया। अंग्रेजों की इन नीतियों का परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज में एक नई तरह की सामाजिक असमानता पैदा हो गई, जो पहले से मौजूद जातिगत और धार्मिक विभाजनों को और गहरा कर गई। इस असमानता ने भारतीय समाज को कमजोर किया और सामाजिक एकजुटता को बाधित किया। ब्रिटिश औद्योगिकीकरण और शासन की नीतियों ने सामाजिक संरचना में विषमता और असमानता को और बढ़ावा दिया, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संघर्ष और अविश्वास बढ़ता चला गया।

[8] यादव, ए. (2016). *हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक असमानता.* रोहतकः आर्यभट्ट पब्लिकेशन्स. पृष्ठ संख्या 81.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बंधुआ मजदूरी, बाल श्रम और मानवाधिकारों का हनन

ब्रिटिश औद्योगिकीकरण के दौरान बंधुआ मजदूरी और बाल श्रम भारतीय समाज के लिए सबसे गंभीर समस्याओं में से एक बन गईं, जो न केवल आर्थिक शोषण का प्रतीक थीं बल्कि मानवाधिकारों के गहरे उल्लंघन का भी उदाहरण थीं। औद्योगिकरण के बढ़ते दबाव के साथ, श्रमिकों का शोषण केवल वयस्कों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बच्चों को भी कठोर और असुरक्षित कार्यों में शामिल किया गया। बाल श्रम औद्योगिक केंद्रों में आम हो गया, जहां बच्चों को सस्ती मजदूरी पर काम पर लगाया जाता था। ये बच्चे कठिन परिस्थितियों में काम करते थे, जिनमें खतरनाक मशीनों के साथ काम करना, लंबे कार्य घंटे और अस्वास्थ्यकर वातावरण शामिल था। इन बच्चों की शिक्षा और बचपन की उपेक्षा की गई, जिससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास बाधित हुआ। बाल श्रम के चलते इन बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो गया और वे गरीबी और असमानता के चक्रव्यूह में फंस गए।[9]

बंधुआ मजदूरी एक और गंभीर समस्या थी, जो कर्ज में डूबे गरीब परिवारों को अपने चंगुल में जकड़े हुए थी। इस व्यवस्था के तहत गरीब किसान और श्रमिक परिवार अपने कर्ज को चुकाने के लिए बंधुआ मजदूर बन जाते थे। कर्ज का बोझ इतना अधिक होता था कि कई बार एक ही परिवार की पीढ़ियों को इस कर्ज को चुकाने के लिए काम करना पड़ता था, लेकिन कर्ज से मुक्ति मिलना लगभग असंभव होता था। इस शोषणकारी प्रणाली ने न केवल मजदूरों को दासता में जकड़ दिया बल्कि उनके मानवाधिकारों का भी घोर उल्लंघन किया। इन परिवारों को आर्थिक स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया और उन्हें जीवन भर बंधुआ मजदूरी की गुलामी में रहना पड़ता था।

महिलाओं और बच्चों को भी इस शोषणकारी प्रणाली में धकेल दिया गया, जिससे परिवारों की स्थिति और भी खराब हो गई। ब्रिटिश सरकार ने इन शोषणकारी प्रथाओं के खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठाए, बल्कि आर्थिक लाभ के लिए इन व्यवस्थाओं का समर्थन किया। यह स्थिति न केवल आर्थिक असमानता को बढ़ाती थी, बल्कि सामाजिक विषमता और मानवाधिकारों के उल्लंघन को भी बढ़ावा देती थी। औद्योगिकीकरण के इस अमानवीय पहलू ने भारतीय श्रमिक वर्ग को पूरी तरह से असहाय बना दिया और वे ब्रिटिश उपनिवेशवाद के कठोर शोषण का शिकार होते गए।[10]

ब्रिटिश औद्योगीकरण ने भारत की पारंपरिक आर्थिक संरचना को नष्ट कर दिया और भारतीय समाज को गहरे आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संकट में डाल दिया। यह प्रक्रिया केवल ब्रिटिश हितों की पूर्ति के लिए चलाई गई थी, जिसमें भारतीय जनता का भारी शोषण हुआ। औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया ने भारत को ब्रिटिश अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग बना

[9] सिंह, आर. (2020). *भारत में श्रम और वर्ग संघर्ष: हरियाणा का संदर्भ.* चंडीगढ़: नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृष्ठ संख्या 39.

[10] यादव, ए. (2016). *हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक असमानता.* रोहतक: आर्यभट्ट पब्लिकेशन्स. पृष्ठ संख्या 81.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

दिया, लेकिन भारतीय श्रमिकों, किसानों और हस्तशिल्पियों की स्थिति दिन–ब–दिन खराब होती गई।

निष्कर्ष:

हरियाणा, एक प्रमुख कृषि–प्रधान राज्य होने के कारण, यहाँ का किसान वर्ग राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जबकि मजदूर एवं जफ्डी श्रमिक वर्ग उत्पादन प्रक्रिया और श्रम आधारित गतिविधियों के प्रमुख संवाहक हैं। दोनों वर्ग, भिन्न कार्यक्षेत्रों के बावजूद, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जो कई स्तरों पर एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं। किसान वर्ग के सामने ''बाजार की अस्थिरता'', ''प्राकृतिक आपदाएँ'', ''उत्पादन लागत में वृद्धि'', ''ऋण का दबाव'', और ''सिंचाई सुविधाओं की कमी'' जैसी समस्याएँ लगातार उनकी आय और स्थिरता को प्रभावित करती हैं। छोटे और सीमांत किसान, संसाधनों की कमी और विपरीत परिस्थितियों के चलते सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इसके विपरीत, बड़े किसान अपेक्षाकृत मजबूत आर्थिक और सामाजिक स्थिति में होने के कारण इन संकटों का बेहतर सामना कर पाते हैं।

मजदूर और जफ्डी श्रमिक वर्ग, विशेषकर औद्योगीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया में, शोषण, असुरक्षित कार्यस्थल, कम मजदूरी, अस्वास्थ्यकर आवास और सामाजिक उपेक्षा जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। औद्योगिक क्षेत्रों में काम करने वाले श्रमिक लंबे कार्य घंटे, श्रमिक अधिकारों की कमी और स्वास्थ्य संबंधी खतरों का सामना करते हैं। इसके अलावा, बाल श्रम, बंधुआ मजदूरी और महिला श्रमिकों की दोहरी भूमिका (घरेलू कार्य और मजदूरी) उनकी स्थिति को और कठिन बना देती है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो, उपनिवेशवादी शासन और उसके बाद भी लागू हुई नीतियों ने सामाजिक असमानताओं और संसाधनों के असमान वितरण को बढ़ावा दिया। इससे निम्न वर्गों में शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों की पहुँच सीमित रही। आज भी यह असमानता किसानों और मजदूरों दोनों की सामाजिक–आर्थिक उन्नति में बाधक बनी हुई है। अतः, हरियाणा के सामाजिक ढाँचे में किसान और मजदूर वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन उनकी पूर्ण क्षमता तभी सामने आ सकती है जब– कृषि में स्थिर और लाभकारी बाजार व्यवस्था हो, सिंचाई और संसाधनों की समान पहुँच सुनिश्चित की जाए, श्रमिकों के लिए सुरक्षित कार्यस्थल, उचित वेतन और सामाजिक सुरक्षा लागू हो, और शिक्षा व कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाया जाए। इस प्रकार, किसान और मजदूर वर्ग की चुनौतियों का समाधान केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के साथ ही संभव है। जब ये दोनों वर्ग सशक्त और सुरक्षित होंगे, तभी हरियाणा की अर्थव्यवस्था और समाज में संतुलित एवं सतत विकास की दिशा में वास्तविक प्रगति होगी।